दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-XIII/V (प्रश्नपत्र-1 : संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (N-M, J-S)–M–**HL13/5**

Name: Devendra Prakash Meena **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** X 7102

Center & Date: DL & 13/08/19 **UPSC Roll No. *(If allotted)*:** 1134510

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में अनेक व्यक्तियों, संगठनो तथा संस्थाओ का योगदान रहा। इसी कड़ी में थियोसोफिकल सोसायटी ने भी हिन्दी को विकसित एवं प्रचारित करने में भूमिका निभाई।

थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1880 के दशक में दक्षिण भारत में हुई। इसके संस्थापक मैडम ब्लाटवोस्की तथा कर्नल अल्काट हिन्दू धर्म से अत्यधिक प्रभावित थे। वे हिन्दू धर्म दर्शन, वेदान्त, मीमांसा को पुनः प्रसारित करने के लिए हिन्दी को एक साधन के रूप में मानते थे।

उनका मानना था कि भारत में हिन्दी ही जनसामान्य की भाषा है। अतः जनता से जुड़ाव रखने के लिए हिन्दी को ही अपनाना चाहिए।

कालान्तर में थियोसोफिकल सोसायटी की अध्यक्ष एनी बेसेन्ट ने सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की। इसका उद्देश्य हिन्दू

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धर्म के सिद्धांत एवं उनके प्रचार-प्रसार के लिए शोध करना था।

तत्कालीन समय में जब हिन्दी का प्रचार-प्रसार आर्य समाज, भारतेन्दु मंडल तथा अनेक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा था, तब थियोसोफिकल सोसायटी ने भी अपनी पत्र-पत्रिकाओं तथा शोध पत्रों के माध्यम से हिन्दी को जन-जन तक पहुंचाया।

एनी बेसेन्ट कांग्रेस की उन चुनिंदा नेताओं में थी, जो क्षेत्रीय भाषाओं एवं हिन्दी को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने के पक्ष में थी।

थियोसोफिकल सोसायटी तथा अन्य संगठनों के अथक प्रयासों के कारण ही वर्तमान में हिन्दी भारत में एक सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है, जो लगभग 70-72 % लोगों द्वारा बोली जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी 'पूर्वी हिन्दी उपभाषा' की एक प्रमुख बोली है, जिसका विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से माना जाता है। यह मुख्यत: लखनऊ, फैजाबाद आदि जिलों में बोली जाती है।

साहित्यिक भाषा के रूप में अवधी का विकास मध्यकाल में सूफी काव्य परम्परा तथा रामभक्ति काव्य परम्परा में हुआ। व्यापक तौर पर काव्यभाषा के रूप में प्रयुक्त होने वाली अवधी की कुछ सीमाएं भी हैं।

सीमाएँ -

(क) तुलसी के काव्य में अवधी का परिपक्व प्रयोग मिलता है, किन्तु तुलसी ने अवधी को केवल औदात्य एवं वात्सल्य तक सीमित रखा।

(ख) जायसी तथा सूफी कवियों के यहाँ ठेठ अवधी का प्रयोग हुआ है, किन्तु यह भी शृंगार के संयोग तथा वियोग पक्ष तक सीमित रहा।

(ग) अवधी की एक सबसे बड़ी सीमा यह है कि यह वर्तमान के आधुनिक संदर्भों के अनुरूप स्वयं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को टाल पाने में असमर्थ रही और धीरे-धीरे खड़ी बोली से प्रतिस्पर्धा में साहित्यिक आधार खो दिया।

(4) साहित्यिक स्तर पर प्रयुक्त अवधी की व्याकरणिक विशेषताओं में कुछ असमानता विद्यमान है जिसके कारण इसका प्रयोग कम होने लगा।

उदाहरण - संज्ञा के तीन रूप पाये जाते है।

- ड़ > र, व > ब, ण > न के रूप में उच्चारण

- क्रिया के प्रचलित रूप साहित्यिक स्तर पर असमान्य।

(5) वर्तमान में गद्य का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाता है, जबकि अवधी अपनी लयात्मकता के कारण पद्य तक सीमित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

19 वीं सदी में खड़ी बोली, अपने बोली स्वरूप का चोला त्यागकर भाषा के रूप में स्थापित हुई। इसके विकास में इसकी सामाजिक प्रकृति, प्रेस का विकास, विभिन्न सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

प्रेस की भूमिका

19 वीं सदी के आरम्भ में हिन्दी का पहला समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रहा, इसके पश्चात् हिन्दी में अनेक समाचार पत्र छपने लगे।

चूंकि तत्कालीन समय में नवजागरण चेतना का प्रसार लगातार हो रहा था। अत: लोगों को सामाजिक मूल्यों, धार्मिक आडम्बरों को दूर करने आदि की शिक्षा दी जा रही थी। ऐसे में विभिन्न संगठनों की पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगी। इनमें 'ज्ञान बोधिनी', 'प्रबोधिनी' आदि प्रमुख है।

खड़ी बोली के विकास में जिस व्यक्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की सबसे अधिक भूमिका है. वे है भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

उन्होंने कविवचन सुधा, बालाबोधिनी, हरिश्चन्द्र मैगजीन, हरिश्चन्द्र चन्द्रिका जैसी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। साथ ही 'काल चक्र' नामक जर्नल में 'हिन्दी नए चाल में ढली' नामक लेख के माध्यम से अन्य व्यक्तियों को भी नवीन विषयवस्तु एवं नई शैली का प्रयोग करने की सलाह दी।

प्रताप नारायण मिश्र ने ब्राह्मण' तथा बाल कृष्ण भट्ट ने 'हिन्द प्रदीप' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

इस प्रकार 19 वीं सदी मे खड़ी बोली के विकास का क्रम उदन्त मार्तण्ड से प्रारंभ होकर सोम प्रकाश से गुजरते हुये भारतेन्दु पर जाकर परिपक्वता को ग्रहण करता है. जिसे 20 वीं सदी के प्रारंभ में 'सरस्वती' पत्रिका द्वारा परिनिष्ठता प्रदान होती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने हेतु उपयुक्त कसौटियाँ

कोई भी भाषा, भाषा बनने से पूर्व बोली के रूप में विद्यमान होती है। कालान्तर में वह व्याकरणिक ढांचे पर कसकर भाषा बनने का गौरव प्राप्त करती है।

बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने की कई कसौटियां हैं उनमें प्रमुख निम्न हैं -

(क) व्याकरणिक ढांचा - किसी भी ~~बोली~~ भाषा का सबसे महत्वपूर्ण अंग, उसकी व्याकरण ही होती है क्योंकि यही उसे मानकता एवं सर्वग्राही बनाती है।

(ख) लिपि - बोली की एक लिपि होनी चाहिए ताकि उसको लिखकर साहित्य सृजन किया जा सके।

(ग) क्षेत्रीय एव जनांकिकीय आधार - पर्याप्त जन समूह का आधार होना चाहिए, ताकि एक सम्पर्क भाषा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके।

(घ) उसमें पर्याप्त मात्रा में साहित्य सृजन किया जा चुका हो, ताकि जनता तक संवेदनाओं का प्रसार किया जा सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु वर्तमान में राजनीतिक आधार पर बोलियों का भाषा का दर्जा दिया जाना, भाषा को सीमित करने जैसा है। इससे धीरे-धीरे यह मांग सभी जगह फैलेगी, तथा भाषा का दायरा संकुचित होता जायेगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लाला लाजपतराय का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा के रूप में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिन्दी को विकसित करने में अथक मेहनत तथा अविस्मरणीय योगदान दिया।

लाला लाजपतराय ने पंजाब तथा वर्तमान पाकिस्तान के लाहौर क्षेत्र में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया।

वे गांधी जी के इस मत से सहमत थे कि - यदि राष्ट्रीय आन्दोलन को जन आन्दोलन बनाना है, तो जनभाषा को महत्त्व देना होगा। उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने का समर्थन किया।

लाला लाजपतराय स्वयं हिन्दी का प्रयोग करते थे और अन्य से भी हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का आग्रह करते थे। उन्होंने 'अनहैप्पी इंडिया' नामक पुस्तक के महत्त्वपूर्ण भागों को लेखों के माध्यम से जनता तक पहुँचाकर राष्ट्रभक्ति की भावना का संचार किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुये उन्होंने कांग्रेस में हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को स्वीकारा।

वे हिन्दी को एकता के सूत्र में बांधने का सशक्त साधन मानते थे और ~~कहा~~ इसे स्वतंत्रता के पश्चात् एकमात्र राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने के पक्षधर थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'पूर्वी हिंदी' और 'पश्चिमी हिंदी' की व्याकरणिक भिन्नताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानक हिन्दी से तात्पर्य खड़ी बोली से विकसित तथा देवनागरी लिपि मे लिखी जाने वाली परिनिष्ठित भाषा है। किसी भी भाषा का मानकीकरण, व्याकरणिक व्यवस्था द्वारा निर्धारित होता है।

कारक व्यवस्था द्वारा संज्ञा एवं सर्वनाम पद किसी वाक्य में अपना स्थान ग्रहण करते है अर्थात वाक्य मे किस स्थान पर कौनसा पद आयेगा यह निर्धारण कारक व्यवस्था से होता है।

हिन्दी में संस्कृत की भांति ही आठ कारक माने गये है। संस्कृत की तुलना में हिन्दी के कारक परसर्गों के माध्यम से वाक्य में उपस्थित होते है -

कर्ता कारक - कर्त्ता कारक वह संज्ञा या सर्वनाम पद है जो कोई क्रिया करता है। इसके लिए सामान्यत: 'ने' परसर्ग प्रयुक्त होता है किन्तु कभी बिना परसर्ग के भी प्रयुक्त होता है।

उदाहरण → राम ने खाना खाया।
राम हँसा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कर्म कारक - वे संज्ञा या सर्वनाम पद, जिनके प्रति क्रिया की जाती है। इसे 'को' परसर्ग द्वारा दर्शाया जाता है।

उदाहरण - राम ने रावण को मारा।

करण कारक - वे संज्ञा पद कि जो क्रिया में साधन के रूप मे प्रयुक्त होते है। इसके लिए 'से' परसर्ग प्रयुक्त होता है।

उदाहरण - राम ने रावण को तीर से मारा।

सम्प्रदान कारक - जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्रिया की गई हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते है। 'के लिए' परसर्ग प्रयुक्त होता है।

उदाहरण - राम ने रावण को तीर से सीता के लिए मारा।

अपादान कारक - वे संज्ञा पद जो पहले क्रिया का भाग होते है, किन्तु बाद में इससे अलग हो जाते है। इसके लिए 'से' परसर्ग प्रयुक्त होता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण - पेड़ से पत्ता गिरा।

संबंध कारक - वे संज्ञा पद जो क्रिया या किसी अन्य कारक से संबंध रखते हैं। इसके लिए 'का, के, की' परसर्ग प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण - यह राम का भाई है।

अधिकरण कारक - वे संज्ञा पद जो कर्ता की भौगोलिक- मानसिक स्थिति दर्शाते हैं। इसके लिए 'में, 'पर' प्रयुक्त होता है।

उदाहरण -
- सीता घर में है।
- वह उस पर निर्भर है।

संबोधन कारक - इसका प्रयोग किसी को संबोधित करने के लिए किया जाता है। 'हे' 'ओ', 'अरे' परसर्गों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण - अरे! इधर आओ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- हे भगवान! रक्षा करो।

इस प्रकार हिन्दी की सफल कारक व्यवस्था इसे एक मानकीकरण रूप प्रदान करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरपूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोली है, जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है। इसका क्षेत्र मथुरा, तथा यमुना के तटवर्ती क्षेत्र है।

सूरदास को ब्रजभाषा को साहित्यिक रूप में विकसित करने का श्रेय प्राप्त है, किन्तु यह भाषा उन से पूर्व भी प्रचलित रही है। इस संबंध में शुक्ल जी कहते हैं-

"चलती हुई ब्रजभाषा को परिपक्व रूप में सूरदास ने प्रयुक्त किया .. भले ही यह मौखिक रूप में विद्यमान रही हो।"

सूरपूर्वयुग में ब्रजभाषा

ब्रजभाषा के आरंभिक स्रोत के रूप में अमीर खुसरो का खालिकबारी, तथा रोडाकृत राउलवेल एवं उक्ति-व्यक्ति प्रकरण प्रमुख साहित्यिक ग्रंथ उपलब्ध है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अमीर खुसरो का ब्रजभाषा के विकास में अतिमहत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने अपनी पहेलियों तथा मुकरियों के माध्यम से सूरदास से पूर्व ही ब्रजभाषा के साहित्य के रूप में विकास की संभावनाएं दर्शा दी थी

द्रष्टव्य है -

"मेरा मोसे सिंगार करावत,
आगे बैठ के मान बढ़ावत।
वासे चिक्कन ना कोउ दीसा,
ऐ सखि साजन! ना सखि सीसा।"

उक्त उदाहरण में मोसे, करावत, दीसा, वासे आदि प्रयोग इसे ब्रजभाषा के निकट लाते है।

अमीर खुसरो ने ब्रजभाषा को खड़ी बोली के साथ भी मिश्रित किया -

"खुसरो दरिया प्रेम की
वाकी उल्टी धार
जो उतरा सो डूब गया
जो डूबा सो पार।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि अमीर खुसरो ने अपनी भाषिक क्षमताओं को प्रकट करते हुये ब्रजभाषा को साहित्यिक आधार प्रदान किया। उन्होंने अपनी भाषिक दक्षता का परिचय अरबी तथा ब्रजभाषा के समन्वय से दिया।

" जे हाल मिसकी मगुन तगाफुल
दुराय नैना बनाय बतियां।"

अतः सूरपूर्वयुग में भी ब्रजभाषा अल्प मात्रा मे साहित्यिक गुणों को धारन कर चुकी थी. जिससे सूर ने अखिल भारतीय रूप प्रदान किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) व्याकरण के धरातल पर हिंदी की विभिन्न बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरण किसी भी भाषा के मानकीकरण का आधार होता है, क्योंकि नियमों में बंधकर परिनिष्ठता एवं सर्वग्राह्यता प्राप्त होती है।

हिन्दी की विभिन्न बोलियों में पारस्परिक संबंध पाया जाता है। अतः व्याकरणिक ढांचे पर भी उनमें समानता पाई जाती है।

(क) सर्वनाम - हिन्दी के मानक रूप में सर्वनाम निम्न है.

उत्तम पुरुष - मैं, मेरा, हम, हमारा

मध्यम पुरुष - तू, तुम, ~~तुम लोग~~, तुम्हारा

अन्य पुरुष - वह, वे, उनका

हिन्दी की बोलियों जैसे अवधी - में (मैं, हैं, मेरा, मोमे, हमर), भोजपुरी (मैं, मुंज, म्है, म्हार) आदि सर्वनाम लगभग समान ही है।

(ख) वचन - वचन के निर्धारण एवं परिवर्तन के नियम सभी बोलियों में लगभग समान ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानक हिन्दी - पुल्लिंग - एँ का प्रयोग
स्त्रीलिंग - इयाँ, ए, याँ

अवधी में (इयाँ, ए, अन), भोजपुरी में (अन, न्ह, इयाँ) आदि का प्रयोग किया जाता है।

(ग) लिंग - लिंग निर्धारण करते समय लगभग सभी बोलियों में समान मापदंड है।

अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा आदि सभी में इकारान्त तथा आकारान्त शब्दों का स्त्रीलिंग माना जाता है।

जैसे - बालिका
- घोड़ी

(घ) कारक व्यवस्था - कारक व्यवस्था में परसर्गों के प्रयोग में समरूपता की स्थिति लगभग सभी बोलियों में पाई जाती है।

कर्ता - ने, नै,
कर्म - को, केहि, कुण
करण - से, सऊ, सेंति

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सम्प्रदान - के लिए, तेहि, वास्ते

संबंध - का, के, केर, कर

आदि परसर्ग सभी बोलियों में प्रयुक्त होते हैं।

(3.) विशेषण - विशेषण के स्तर पर भी समरूपता की स्थिति पाई जाती है -

संख्यावाची विशेषण - बीस, दस, उन्नीस,

अन्य - काला, ओछा, वाने.

इस प्रकार स्पष्ट है कि हिन्दी की विभिन्न बोलियों में व्याकरणिक धरातल पर समरूपता पाई जाती है, क्योंकि हिन्दी के विकास क्रम में पुरानी हिन्दी तक अधिकांश व्याकरणिक नियम निर्धारित होने लगे थे तथा बोलियों का विकास उसके पश्चात् हुआ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

अवधी पूर्वी हिन्दी की एक महत्वपूर्ण बोली है। जिसका विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से माना जाता है।

मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में हिन्दी का विकास सूफीकाव्यधारा तथा रामभक्ति काव्यधारा में हुआ। सूफीकाव्यधारा में कवियों ने ठेठ अवधी को अपना आधार बनाया।

सूफी कवियो ने अपनी प्रेम संबंधी अनुभूतियों को प्रकट करने के लिए स्थानीय कहानियो में ठेठ अवधी के माध्यम से शृंगार रस को मधुरता प्रदान की।

सूफी कवियो में कुतुबन (मृगावती), मुल्ला दाउद (चन्दायन (लोरिकहा), जायसी (पद्मावत) तथा मंझन (मधुमालती) प्रमुख है।

मुल्ला दाउद ने अवधी को साहित्यिक रूप में प्रकट करते हुये, उसे प्रेम मूल्य के साथ संबद्ध किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"दाऊद कवि जो चांदा गाई
जेई रे सुना, सो गा मुरझाई।"

अवधी को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका जायसी की है। उन्होंने अपने रचनाकर्म में ठेठ अवधी के माधुर्य को प्रकट किया है।

आचार्य शुक्ल जी ने भी उनके माधुर्य की प्रशंसा करते हुये लिखा है - "जायसी का माधुर्य निराला है, यह माधुर्य भाषा की मधुरता है।"

द्रष्टव्य है - "नैन चुवहिं जस महवट नीरू।"

जायसी ने अवधी को शृंगार की भाषा के रूप में प्रकट किया, जिसकी मार्मिकता का स्तर अन्तर्मन की गहराई को छू जाता है। उन्होंने बारहमासा रूढ़ि का प्रयोग करते हुये वियोग शृंगार को नवीन माधुर्य प्रदान किया -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" यह तन जारौ छार कै,
कहौ कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परै
कंत धरै जहां पाव।"

जायसी ने साहित्यिक भावा के सभी प्रतिमानों को पूरा किया। उन्होंने अवधी को बिम्ब क्षमता से भी युक्त किया। बिम्ब क्षमता का उनका उदाहरण वर्तमान उदाहरणों से भी श्रेष्ठ सिद्ध होता है -

" जेठ जरै जग बहै लुवारा
उठै बवंडर धिकै पहारा।"

मंझन ने मधुमालती में अपनी तसव्वुफ परम्परा को प्रकट करते हुये प्रेम के महत्व को स्पष्ट किया। उन्होंने जायसी की भाँति सधी हुई ठेठ अवधी का प्रयोग किया।

" प्रथमहि आदि प्रेम परविस्टी,
तौ पाछे भई सकल सिरीस्टी।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि ~~सू~~ सूफी काव्य परम्परा में अवधी ने अपनी छ्छपन तथा माधुर्य क्षमता के साथ उपस्थिति दर्ज कराई। जिसे तुलसी ने आगे संस्कृत परम्परा से संबद्ध कर विस्तृत किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी के मानकीकरण के क्षेत्र में व्याकरण संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान में हिन्दी मानकीकरण की लगभग सभी चुनौतियों को पूर्ण कर चुकी है किन्तु अभी भी कई स्तरों पर इसमें कई सीमाएँ ~~अभ~~ उपस्थित है -

(क) लिंग - लिंग के चयन मे अधिकांशतः मानकता है किन्तु नपुसंकलिंग के निर्धारण के लिए कोई नियम नहीं है।

उदाहरण - भिंडी, बस - स्त्रीलिंग
टमाटर, ट्रक - पुल्लिंग

इसी तरह पदनाम के लिंग निर्धारण में भी समस्या आती है।

उदाहरण - राष्ट्रपति
प्रधानमंत्री

इसके अतिरिक्त कई शब्द जो अन्य भाषाओं में ~~स्त्रीलिंग~~ पुल्लिंग है। (आत्मा, वायु) को हिन्दी में स्त्रीलिंग माना गया है।

(ख) वचन - वचन के स्तर पर भी कुछ सीमायें उपस्थित है-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे - वह जाती है > वे जाती हैं
वह जाता है > वे जाते हैं।

(ग) सर्वनाम - सर्वनाम के स्तर पर पूर्वी तथा पश्चिमी हिन्दी में विभेद अस्थित है।

पूर्वी हिन्दी		पश्चिमी हिन्दी	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
तुम	तुम लोग	तू	तुम
हम	हम लोग	मैं	हम

(घ) संज्ञा - संज्ञा के स्तर पर कुछ असमानता रूप प्रचलित है।
जैसे - राने। सुरमें, कलकत्ते

(च) कारक - कारक व्यवस्था में परसर्गों के प्रयोग के स्तर पर भी कुछ असमानताएँ विद्यमान है।
जैसे - मुझे > मुझको ✓
- मेरेको ×

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार हिन्दी के व्याकरणिक ढाँचे में कई चुनौतियाँ है, किन्तु लगातार मानकीकरण की प्रक्रिया जारी है, जिससे हिन्दी अखिल भारतीय भाषा के रूप में अपना प्रभाव स्थापित कर रही है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के नामकरण पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि भारत की आधिकारिक लिपि है, जिसका विकास ब्राह्मी लिपि से माना गया है।

वस्तुत: ब्राह्मी के परवर्ती रूप में यह दो भागों में विभक्त हो गई।

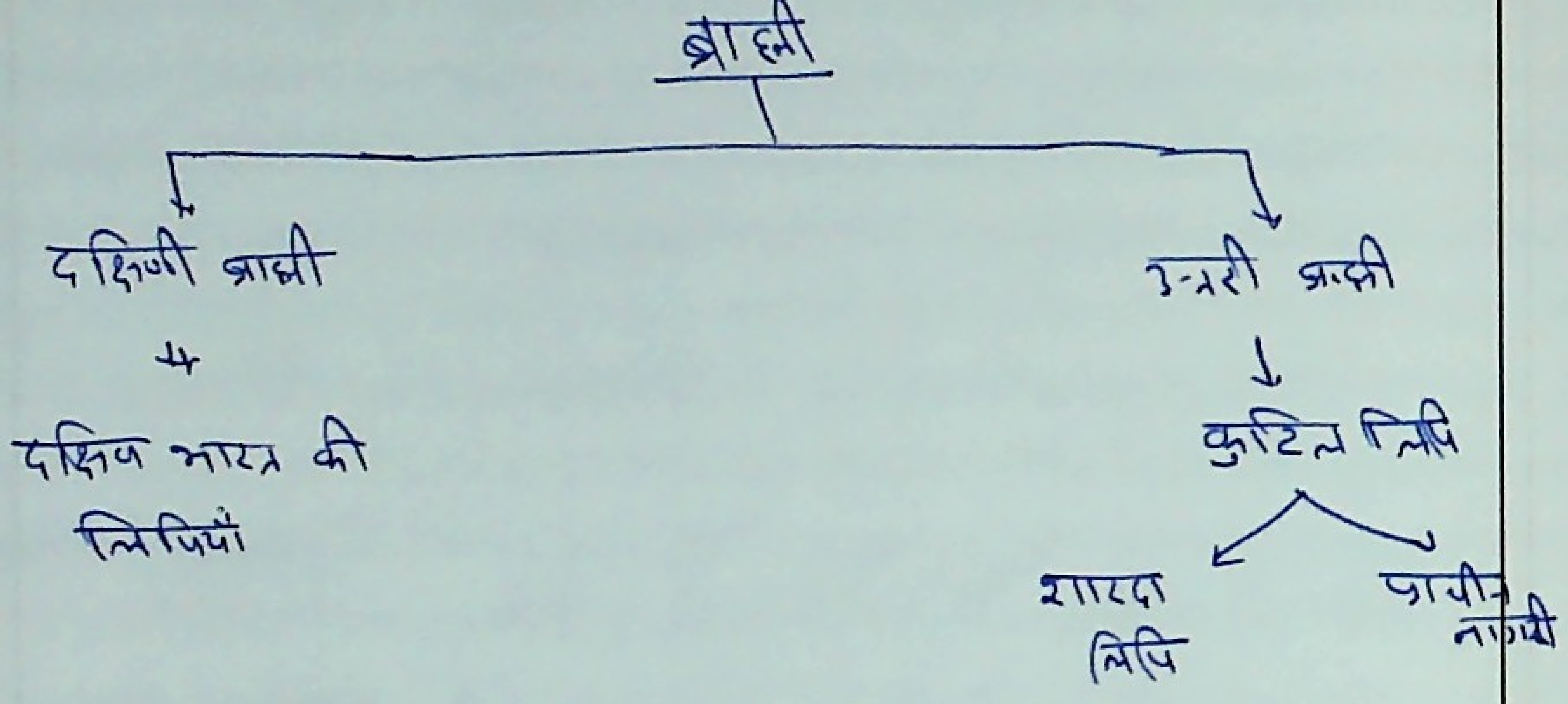

नामकरण - देवनागरी के नामकरण के संबंध में विद्वानों का एकमत नहीं है। उन्होंने इसके नामकरण से संबंधित कई मान्यताएँ स्पष्ट की है।

कुछ भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि 'देवनगर' नामक स्थान पर प्रयुक्त होने के कारण इसका नाम देवनागरी हुई।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साथ ही कुछ भाषा वैज्ञानिकों की राय है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय के उपनाम 'देव' के कारण इस ~~भाषा~~ लिपि का नाम देवनागरी हुआ।

सबसे प्रमुख एवं सर्वमान्य राय इसके संस्कृत परम्परा से व्युत्पत्ति को माना जाता है। विद्वानों की राय है कि संस्कृत को देववाणी माना जाता है और देववाणी इसी लिपि में लिखी गई।

साथ ही संस्कृत एक परिनिष्ठित भाषा थी, जो ~~स~~ सुशिक्षित ~~विद्व~~ नागरीय विद्वानों द्वारा प्रयुक्त की जाती थी। इसलिए इसका नाम 'देवनागरी' पड़ा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि देवनागरी के नामकरण के संदर्भ में अनेक मत उपस्थित है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) 'कहानी का रंगमंच'

समकालीन समय में जब रंगमंच कला का पतन हो रहा है, ऐसे में कहानी के मंचन के माध्यम से इस कला को जीवित रखने का प्रयास किया जा रहा है।

कहानी के मंचन का आरंभ सर्वप्रथम 'नई कहानी' दौर में निर्मल वर्मा की कहानियो के मंचन से प्रारंभ हुआ।

कहानी के मंचन में पर्याप्त संभावनाओं को देखते हुये अनेक रंगमंचों ने इसे स्वीकारा तथा धीरे-धीरे इसका विकास किया।

कहानी के मंचन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका संक्षिप्त होना है, क्योंकि वर्तमान में समय की कम उपलब्धता इसे अधिक आकर्षित करती है।

कहानी के मंचन द्वारा बच्चों के मानसिक विकास को एक मजबूत आधार प्रदान किया जा सकता है, क्योंकि इससे भावनात्मक एवं संवेदनात्मक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सुदृढ़ता प्राप्त होती है।

वर्तमान में अनेक सोशल मीडिया प्लेटफार्म (जैसे - यू ट्यूब) कहानी के मंचन को प्रस्तुत कर रहे है।

हाल ही में दिल्ली विश्वविद्यालय ने एक कार्यक्रम में 'भीष्म साहनी' की कहानी 'चीफ की दावत' का मंचन कर, कहानी के रंगमंच परम्परा को और समृद्ध किया गया।

अतः वर्तमान में बढ़ती प्रतिस्पर्धा में कहानी रंगमंच इस कला को पुनर्जीवन देने में एक अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

पल्लव की भूमिका का महत्व विलियम वर्ड्सवर्थ द्वारा स्वच्छन्दतावाद की भूमिका को स्पष्ट करने के समान महत्व है। पल्लव की भूमिका में 'सुमित्रानन्दन पंत' ने छायावाद के प्रतिमान स्थापित किये।

पल्लव की भूमिका में वे स्पष्ट करते हुये कहते है कि-

→ छायावाद, स्वच्छन्दतावाद का विकसित रूप है, क्योंकि यह स्वतंत्रता को मूल्य के रूप में स्थापित करता है।

→ छायावाद प्रकृति के संबद्धता को भी संदर्भित करता है, क्योंकि प्रकृति को सबसे सुन्दर माना गया है।

→ छायावाद खड़ी बोली के पूर्ण विकसित अवस्था को दर्शाता है, क्योंकि इसमें न केवल व्याकरणिक बल्कि शब्दों के स्तर पर भी परिनिष्ठता प्राप्त की गई।

- छायावाद में कई नवीन अलंकारों जैसे-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything, except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानवीकरण, विशेषण विपर्यय आदि का विकास हुआ।

→ छायावाद ने मुक्त छंद को महत्त्व दिया। अर्थात छंदानुसार भाव की जगह, भावानुसार छंद को महत्त्व दिया।

इस प्रकार पल्लव की भूमिका ने छायावाद की विस्तृत व्याख्या की, जिससे छायावाद को एक सैद्धांतिक आधार प्राप्त हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

अज्ञेय उत्कृष्ट प्रयोगों एवं सूक्ष्म अनुभूति के कवि है। उनके द्वारा काव्य के नवीन प्रतिमान स्थापित किये गये तो साथ ही उन्होंने काव्य को अनुभूति का विषय बनाया।

अज्ञेय के अनुसार काव्य का प्रभाव ~~ब्र~~ 'ब्रह्मानन्द सहोदर' की भांति होता है क्योंकि इससे आनन्द की अनुभूति उस स्तर पर होती है, जिसमें व्यक्ति अपने स्वधर्म को तलाशता है।

" ~~सब एकाकी~~
" डूब गये सब एक साथ,
एक अलग-अलग एकाकी पार तिरे.
उठ गई सभा, सब अपने काम लगे,
युग पलट गया।"

अर्थात अज्ञेय के अनुसार काव्यानुभूति व्यक्ति को मोक्ष के समान सुख की अनुभूति कराती है। यदि काव्य की सूक्ष्मता को वह समझ सकता है, उस स्थिति में ईश्वर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

स्तुति के समान चरम सुख की प्राप्ति होती है।

काव्य व्यक्ति को बाहरी बंधनों से मुक्त करता है और उसकी वास्तविक स्थिति अर्थात 'स्व' की खोज कराता है -

"मुझे स्मरण है.
पर मैं मुझको भूल गया हूँ।"

अत: स्पष्ट है कि अज्ञेय की काव्यानुभूति काव्य को 'ब्रह्म' के समान महसूस करती है।-

"अवतरित हुआ संगीत स्वयंभू
जिसमें सोता है. ~~अखंड ब्र~~
अखंड ब्रह्म का मौन।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) छायावाद के नए अलंकार

छायावाद को हिन्दी के विकास क्रम में एक महत्त्वपूर्ण काल खंड माना जाता है, क्योंकि भाषायी स्तर पर साहित्यिक परिपक्वता तथा नवीन शब्दों का विकास (स्वर्णिम) इसी काल में हुआ।

छायावाद में अलंकार क्षेत्र का भी व्यापक विस्तार हुआ। चूंकि यह काल ~~छायावाद~~ प्रकृति को पर्याप्त महत्त्व देता है तथा नाद सौंदर्य को कविता में प्रकट करता है। अतः कुछ नवीन अलंकारों का विकास हुआ -

(क) प्रकृति का मानवीकरण - आचार्य शुक्ल जी ने 'कविता क्या है' निबंध में मानवेतर जगत को कविता का हिस्सा बनाये जाने का प्रतिमान स्थापित किया था। छायावाद ने यहाँ प्रकृति को मानव रूप में स्थापित किया।

" मेघमय आसमान से उतर रही,
संध्या सुन्दर परी सी,
धीरे - धीरे - धीरे ... ।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(च) विशेषण- विपर्यय - इस काल में किसी की विशेषता प्रकट करने के संदर्भ में विशेषण-विपर्यय अलंकार का विकास हुआ।

(ग) ध्वन्यार्थ व्यंजना अलंकार - इस अलंकार का विकास इस काल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि छायावाद हिन्दी के विकास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण युग था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

जैनेन्द्र मनोविश्लेषणवादी विचारधारा के लेखक है। उनके उपन्यासों में कथ्य - कथानक में अन्तर्योजित करने के लिए उन्होंने वर्गगत पात्रों की बजाय विशिष्ट पात्रों का चयन किया है। उन्हीं में 'परख' की कट्टो एक महत्वपूर्ण पात्र है

'परख' उपन्यास में भी अन्य उपन्यासों की भांति नारी पात्र अधिक सजीव - सचेष्ट नजर आते है। उनमें आंतरिक द्वंद्व अधिक उपस्थित है।

'कट्टो' एक विधवा है, जिसे पड़ोसी एक युवक से प्रेम हो जाता है, किन्तु सत्यधन दहेज के लालच में गरिमा से विवाह कर लेता है। तथा ~~जिसके~~ गरिमा का भाई कट्टो से विवाह कर लेता है।

इस प्रकार 'कट्टो' के आंतरिक मन में एक संघर्ष की उपस्थिति होती है। उसका हृदय उसे प्रेमी के समीप खींचने की कोशिश करता है, वहीं मस्तिष्क इसे सामाजिक बंधनों में रहने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को बाध्य करता है।

त्यागपत्र की मृणाल की भांति कट्टो भी सामाजिक बंधनों को तोड़ना-फोड़ना नहीं चाहती है और उस पीड़ा को स्वीकार करती है।

इस दृष्टि से 'कट्टो', यशपाल की 'दिव्या' से कमजोर दिखाई देती है, क्योंकि 'दिव्या' सामाजिक बंधनों की पीड़ा को अंत में तोड़ देती है।

इस प्रकार परख की 'कट्टो' जैनेन्द्र की मनोविश्लेषणवादी विचारधारा से प्रभावित नारी पात्र है, जो आद्यन्त 'आत्म संघर्ष' झेलती है।

कृपया इस स्था... कुछ न लिखें।
(Please don't w... anything in thi...

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या गोस्वामी तुलसीदास का कलियुग-वर्णन तद्युगीन अमानवीय स्थितियों का ही आख्यान है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोस्वामी तुलसीदास का महत्त्व अपनी रामचरित मानस तथा भक्ति भावना के कारण तो है ही साथ ही इसलिए भी है ~~क्योंकि~~ उन्होंने तत्कालीन समय में पहली बार कलयुग की अवधारणा दी।

तुलसी के यहाँ कलयुग किसी पारलौकिकता तथा रामराज्य स्वर्गीय कल्पना नहीं बल्कि एक वास्तविक यथास्थिति है।

तुलसी ने कलयुग की अवधारणा को स्पष्ट करते हुये तत्कालीन अमानवीय स्थितियों को कलयुग कहा।

(क) अकाल - तत्कालीन समय में अकालों की लगातार बढ़ रही बारम्बारता ने तुलसी को कलयुग के लक्षण के रूप में अकाल को प्रकट करने के लिए बाध्य किया।

"कलि बारहिं बार दुकाल परै,
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

(ख) बेरोजगारी - तत्कालीन समय में बढ़ रही बेरोजगारी की समस्या को तुलसी ने गंभीरता से प्रकट किया है। उन्होंने यहाँ तक लिखा है कि भूख एवं बेकारी ने लोगों को बच्चे बेचने पर मजबूर किया।

"खेती न किसान को,
भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज नहीं,
चाकर को चाकरी।"

(ग) गरीबी - उन्होंने खाद्यान्न की कमी को भी अकाल का लक्षण माना है।

"दारिद दसानन दबाई दुनी दीनबंधु
दुरित दहन देख तुलसी हहाकरी।"

(घ) राजव्यवस्था का पतन - तुलसी ने तत्कालीन राजव्यवस्था के पतन को भी कलियुग की अवधारणा के साथ जोड़ा है, उन्होंने लिखा है कि राजव्यवस्था का पतन किस तरह अपराधी को छोड़कर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निरपराध को दंड देता है -

" साम न दाम न भेद कलि,
केवल दंड कराल।"

किन्तु तुलसी का महत्व इस बात में है कि उन्होंने तत्कालीन अमानवीय स्थितियों को न केवल उजागर किया बल्कि उनकी समाप्ति के उपाय भी सुझाये।

तुलसी ने कलयुग के समक्ष रामराज्य को एक विकल्प की तरह प्रस्तुत किया। जिसमें -

" दैहिक, दैविक, भौतिक तापा,
राम राज्य काहिं नहीं व्यापा।"

" सुलभ पदारथ चारी।"

वे तत्कालीन राजा को भी जनता के प्रति उचित आचरण की सलाह देते है -

" जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अवस नरक अधिकारी।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार स्पष्ट है कि तुलसी ने सभी अमानवीय स्थितियों को कलयुग मानते हुये रामराज्य की स्थापना पर बल दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश कृत 'आधे - अधूरे' नाटक अस्तित्ववादी विचारधारा से प्रभावित है, जिसकी मूल संवेदना संबंधों की टकराहट है।

वस्तुत: मोहन राकेश नव लेखन दौर के प्रमुख रचनाकार है, जो ऐतिहासिकता के आवरण में वर्तमान समस्याएँ दर्शाते है किन्तु आधे - अधूरे मे उन्होंने ऐतिहासिक आवरण त्यागते हुये सीधा वर्तमान समस्याओं का चित्रण किया है।

'आधे - अधूरे' के मुख पात्र महेन्द्र नाथ तथा उनकी पत्नी सावित्री है। महेन्द्रनाथ प्रत्येक मनुष्य की भाँति कुछ सीमाओं से युक्त है

जबकि सावित्री एक पूर्ण मनुष्य चाहती है। यही पूर्णता की इच्छा विसंगति का कारण है। सार्त्र ने कहा भी है -

"विसंगति न समाज में है और न ही मनुष्य में। यह दोनो के एक साथ रहने में है। व्यक्ति का अपने परिवेश तथा इच्छा से अलगाव ही विसंगति है।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इसी पूर्णता की चाह में सावित्री अनेक पुरुषों से टकराती है और अंततः सब को अधूरा पाती है। और दोनों इसी अधूरेपन एवं टकराहट के साथ जीने को विवश है।

पारिवारिक संघर्ष में किस तरह बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मोहन राकेश ने इस नकारात्मकता को भी उभारा है। यह टकराहट बच्चों को मानसिक तौर पर चिड़चिड़ा एवं हिंसक बना देती है।

इस नाटक की एक विशेषता, जो इसे अन्य नाटकों आषाढ़ का एक दिन तथा लहरों के राजहंस से अलग करती है। वह है इसकी समकालिकता एवं अंत में महेन्द्रनाथ का लौटना।

अपनी कहानी 'एक और जिंदगी' में मोहन राकेश लिखते है -

" मेरी रचनाएँ आज के संदर्भ में संबंधों की यंत्रणा को अकेलेपन में झेलते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लोगों की रचना है।"

आधे-अधूरे के दोनो पात्र तमाम यंत्रणाएं झेलते हुये विसंगति बोध के शिकार होकर साथ रहने को अभिशप्त है। इस

इस तरह आधे-अधूरे में मोहन राकेश ने अस्तित्ववादी विचारधारा का प्रक्षेपण किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)